हिन्दू मुसलिम मेल

(परिवर्द्धित संस्करण)

बिलकुल निःपक्षता से हिन्दू मुसलमानों को दी गई सलाह, जिसमें धार्मिक सामाजिक राजनैतिक आदि दृष्टि से दोनों में मेल और उनकी भलाई की राह दिखाई गई है। एक दूसरेको मिटाने की तथा एक दूसरे पर अधिकार जमानेकी भूल बताकर राष्ट्रीयता और मनुष्यताका सन्देश दिया गया है।

लेखक

सत्यसमाज के संस्थापक, सत्याश्रम वर्धा के कुलगुरु

स्वामी सत्यभक्त

प्रकाशकः--मन्त्री सत्याश्रम वर्धा (सी. पी.)

मुद्रकः— मैनेजर–सत्येश्वर प्रिंटिंग प्रेस वर्धा

मही--११९४७ इतिहास संवत्

मूल्य तीन आना | दूसरी आवृत्ति | वितरण के लिये १४. सैकड़ा

सत्यभक्त साहित्य

राजनैतिक सामाजिक धार्मिक कौटुम्बिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक साहित्यिक सभी समस्याओं को सुलझानेवाला सब तरह का पठनीय साहित्य, सत्यभक्त साहित्य है। जिसमें स्वामी सत्यभक्तजी के जीवनभर के अनुभवों और तर्कों का निचोड़ विविध रूपों में परोसा गया है।

सत्यामृत (मानवधर्म शास्त्र)		जैनधर्ममीमांसा	
१ ,, दृष्टिकांड	१॥ रु	१९ ,, पहिला खंड-दर्शन इतिहास	१
२ ,, आचारकांड	२ रु.	२० ,, दूसरा ,, ज्ञानकांड	१॥
३ ,, व्यवहारकांड	५ रु.	२१ ,, तीसरा ,, चारित्रकांड	१॥
४ नया संसार (भ्रमण वृत्तांत	१।	२२ म. राम [नाटक कविताएँ]	।
५ गागरमें सागर (लघुकथा)	॥।	२३ क्यों सलाम करूँ रा. नै. कथा	≡
६ ,, मराठी (बिन्दूत सिंधू)	॥।	२४ शीलवती [कथा और गीत)	=॥
७ नाग यज्ञ (नाटक)	१।	२५ लिपिसमस्या [टेलीग्राफी भी]	।
८ मेरी विकासकथा (रूपक)	॥।	२६ अनमोलपत्र	–
९ सत्यसंगीत—कविताएँ	॥।	२७ न्यायप्रदीप	१
१० आत्मकथा—स्वामीजी की—	१।	२८ सत्यसमाज और प्रार्थना	–
११ सूरजप्रश्न-महत्त्वपूर्ण प्रश्न	॥।=	२९ भावनागीत	–
१२ सुलझी गुत्थियां ,,	।	३० मुसलिम भाइयों से	≡
१३ चतुर महावीर—कथाएँ	१	३१ हिन्दू भाइयों से (दू. आ.)	=॥
१४ नई दुनियाका नया समाज	।=	३२ मन्दिरका चबूतरा [उपन्यास]	॥।)
१५ विवाह पद्धति [दू. आ.]	=	३३ जीवन-सूत्र	।=
१६ ईसाईधर्म-जीवन और उपदेश	।–	३४ सुखकी खोज (कहानियाँ)	१
१७ कृष्णगीता [हिंदीमें नई गीता]	॥।	३५ हिन्दू मुसलिम मेल	≡
१८ बुद्ध हृदय [म. बुद्धकी डायरी]	।=	३६ ,, इत्तहाद (उर्दू)	।

निम्नलिखित पुस्तकें समाप्त हो चुकी हैं दूसरी बार छपनेपर मिल सकेंगी

३७ निरतिवाद	॥=	३९ कुरान की झांकी	
३८ सर्वधर्मसमभाव	=		

अग्निपरीक्षा [वैज्ञानिक कथा संग्रह] मानव भाषा आदि छपनेवाले हैं।

प्रतिमास स्वामी सत्यभक्तजी के सन्देश देनेवाला, कविता कहानियां लेख टिप्पणियाँ विनोदी लहरों से भरा हुआ—

संगम (मासिक पत्र) वार्षिक मूल्य ३)

सत्याश्रम वर्धा (सी. पी.)

हिन्दू मुसलिम मेल

हिन्दू मुसलमान एक ही देश के निवासी हैं इनके आर्थिक स्वार्थ एकसे हैं-दिनरात का जीवन इस तरह मिला है कि अलग नहीं किया जा सकता। इतना होनेपर भी आज दोनों में इतना वैर फैलासा मालूम होता है मानों साँप और नौले सरीखा उनमें जन्म से वैर हो। और बहुत से लोग तो ऐसे हैं जो दोनों की एकता में विश्वास ही नहीं करते।

पर गौर से देखने से पता लगता है कि हिन्दू मुसलमान दोनों ही एक दूसरे से मिलते जा रहे थे। असहयोग के बाद राजनैतिक स्वार्थ के कारण अगर दोनों में जानबूझकर वैर पैदा न कराया गया होता तो इन दिनों में दोनों बिलकुल मिल गये होते। पर इसमें जिनके स्वार्थ को धक्का लग रहा था उनने लोगों के भीतर छिपे हुए शैतान को उभाड़ा--दोनों की बरबादी की और दोनों की कब्र पर अपना महल बनाना चाहा। वे आज अपनी कोशिश में सफल हुए मालूम होते हैं पर यह भूलना न चाहिये कि आसमान कितने ही घने बादलों से क्यों न छा जाये सूर्य का उदय रुक नहीं सकता। इसी तरह हिन्दू मुसलमानों का मेल हजार कोशिशों पर भी रुक नहीं सकता।

इस देश के लिये यह नया प्रसंग नहीं है। एक दिन आर्य अनार्यो का झगड़ा हिन्दू मुसलमानों से बढ़कर था। दोनों की वंशपरम्परा हिन्दू मुसलमानों की अपेक्षा अधिक जुदी थी फिर भी आज आर्य अनार्य साफ हो गये हैं--दोनों की मिलकर एक कौम बन गई है, एक सभ्यता और एक धर्म बन गया है।

अपनी अपनी विशेषता से चिपके रहने से विशेषता और समानता सब नष्ट होजाती है। अहंकार सब को खा जाता है। आर्यों और नागों ने जब इस तत्व को समझा तब दोनों में एकता हुई।

आज भी वैसी ही परिस्थिति है। हिन्दू मुसलमान मिलकर एक नहीं हो सकते यह मान्यता बहुतों की है। पर अगर आर्य और नाग मिलकर एक होगये तो मैं नहीं समझता कि हिन्दू मुसलमानों में उनसे अधिक क्या अन्तर है। नागयज्ञ सरीखी क्रूरता तो हिन्दू और मुसलमान दोनों में से कोई भी नहीं दिखासकता।

हिन्दू मुसलमानों में क्या क्या भेद कहा जाता है या किनकिन बातों पर तनातनी होती है इन बातों पर यहां विचार किया जाता है।

१ मूर्तिपूजा

१ आर्यसमाजी ब्राह्मसमाजी स्थानकवासी आदि अनेक सम्प्रदाय हिन्दुओं में भी ऐसे हैं जो मूर्तिपूजा के विरोधी हैं सिक्ख और तारणपंथी अर्ध मूर्तिपूजक हैं अर्थात् वे शास्त्र की पूजा मूर्ति सरीखी करते हैं और मुसलमान भी अर्ध मूर्तिपूजक हैं, वे ताजिया और कब्र पूजते हैं, काबा का पत्थर चूमते हैं, मसजिदों में जूते पहिन कर जाने की मनाई करते हैं, यह सब भी एक तरह की मूर्तिपूजा है, ईट चूना पत्थर में आदरभाव भी मूर्ति-पूजा है इसलिये हिन्दू मुसलमान दोनों ही मूर्तिपूजक हैं। यों असल में न हिन्दू मूर्तिपूजक हैं न मुसलमान मूर्तिपूजक हैं। मूर्ति या ईट चूना पत्थर को ईश्वर या खुदा कोई नहीं मानता, सभी इन्हें खुदा या ईश्वर को याद कराने-वाला निमित्त मानते हैं। किसी को मसजिद देखकर खुदा याद आता है किसी को मूर्ति देखकर खुदा याद आता है। सब धर्मस्थान या प्रतीक खुदा को पढ़ने या समझने की किताबें हैं। रामजी की मूर्ति के सामने पूजा करनेवाला हिन्दू रामजी की नीतिमत्ता प्रजापालकता त्याग उदारता वीरता आदि गुणों का वर्णन करता है यह नहीं कहता कि हे भगवान, तुम संगमरमर के बने हो बड़े चिकने हो बड़े वजनदार हो आदि। इसी

प्रकार मक्का की तरफ़ मुंह करके नमाज पढ़नेवाला मुसलमान मक्का के पत्थरों का ध्यान नहीं करता, दोनों सिर्फ़ सहारा लेते हैं ध्यान तो खुदा या ईश्वर का करते हैं इसलिये दोनों मूर्तिपूजक नहीं हैं।

हां, इस्लाम में जो अमुक तरह की मूर्तिपूजा की मनाई की गई है उसका कारण यह है कि हजरत मुहम्मद साहिब के समय में मूर्तियों के नाम पर दलबन्दी लड़ाई झगड़े बहुत हो गये थे। हरएक मूर्ति मानों ईश्वर हो और मनुष्यों के समान मानों ईश्वरों में भी झगड़े होते हों। मूर्ति को आधार बनाकर ये सब बुराइयाँ फलफूल रही थीं इसलिये मूर्तियां अलग कर दी गई। पर ईश्वर को याद करने के लिये जो सहारे थे वे नष्ट नहीं किये गये। मतलब यह कि बुराई मूर्ति में नहीं है किन्तु उसे ईश्वर मानने में, मूर्तियों के समान ईश्वर को जुदा जुदा कर लड़ाने में उनके निमित्त वैर विरोध बढ़ाने में है। इस बात को हिन्दू भी मंजूर करेगा मुसलमान भी मंजूर करेगा। मूर्ति का सहारा लेना नास्तिकता नहीं है। यह तो रुचि योग्यता आदि का सवाल है। इसलिये मूर्ति अमूर्ति को लेकर सम्प्रदाय न बनाना चाहिये। हो सकता है कि मुझे मूर्ति के सहारे की ज़रूरत न हो और मेरे बच्चे को या पत्नी को हो अथवा मुझे उसकी जरूरत हो किन्तु मेरे बेटे को न हो इसलिये मूर्ति अमूर्ति के सम्प्रदाय न बनना चाहिये। रुचि के अनुसार उपयोग करना ही उचित है।

जब कि हिन्दू बिना मूर्ति के सन्ध्या सामायिक प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रियाएँ करते हैं तब मूर्ति के बिना नमाज क्यों नहीं पढ़ी जासकती और जब मुसलमान कब्र ताजिया काबा आदि का सहारा लेते हैं तब मूर्ति में क्या झगड़ा है। यह तो कोई बात न हुई कि हजरत मुहम्मद साहिब की कब्र का विरोध किया जाय पर दूसरे फकीरों की कब्रों पर रेवड़ियाँ चढ़ाई जांय, अपने अपने बाप की और राजा महाराजाओं की देशसेवकों की और अनेक सुन्दरियों की तसबीरें घर में लटकाई जांय किन्तु हजरत मुहम्मद साहिब की तसबीर का विरोध किया जाय। यह सब तो एक तरह से हजरत का अपमान कहलाया। हजरत ने अगर अपना स्मारक बनाने की मनाई की थी तो यह तो उनकी नम्रता थी और यह विचार

था कि लोग कहीं बुतपरस्त न बन जायँ। खैर, सीधी सी बात यह है कि यह सब रुचि और लियाक़त का सवाल है। इसमें विरोध करने की या किसी बात पर जोर देने की जरूरत नहीं है। हिन्दू और मुसलमान दोनों को रुचि और लियाक़त पर ध्यान देना चाहिये। इन्हें मजहबी भेद का कारण न बनाना चाहिये। व्यवहार में तो हिन्दुओं में भी मूर्तिपूजक हैं और उसके विरोधी भी हैं और मुसलमानों में भी मूर्तिपूजक हैं और उसके विरोधी भी हैं।

२–मांस भक्षण

१–हिन्दुओं में सौ में पचहत्तर हिन्दू मांसभक्षी हैं। शूद्र कहलाने वाली अधिकांश जातियां मांस खाती हैं बंगाल उड़ीसा मैथुल आदि प्रांतों में उच्च जाति के कहलानेवाले ब्राम्हण आदि भी मांस खाते हैं। क्षत्रिय लोग अधिकतर मांस खाते हैं। सिक्ख मांस खाते हैं ईसाई भी खाते हैं इसलिये मांसभक्षण हिन्दू मुसलमानों के भेद का कारण नहीं कहा जा सकता। बहुत से बहुत इतना ही हो सकता है कि जो लोग मांसभोजन से बहुत अधिक परहेज करते हैं वे मांसभक्षियों के यहां भोजन न करें उनके साथ भोजन करने में साधारणतः आपत्ति न होना चाहिये।

पर इस हालत में हिन्दू मुसलमान का भेद न होगा मांसभोजी शाकभोजी का भेद होगा।

हां, मांसभोजन का विरोध हिन्दू और मुसलमान दोनों करते हैं। अहिंसा को दोनों महत्व देते हैं। यही कारण है कि हज करते समय हर एक मुसलमान को मांस का बिलकुल त्याग करना पड़ता है जूं मारना भी मना है। साधारण दिनों में अगर किसी प्राणी को मारना भी पड़े तो तड़-पाना मना है। अगर हिंसा धर्म होता तो हज के दिनों में अधिक से अधिक मांस खाने का उपदेश होता, मांसत्याग का नहीं। हिन्दुओं में भी मांसत्याग को बड़ा पुण्य माना है। इस प्रकार मूल में तो दोनों ही अहिंसावादी हैं आदत के कारण या कमजोरी के कारण जो हिंसा रह गई है वह दोनों तरफ है ऐसी हालत में झगड़ने का क्या कारण है ?

३ गोवध

गोवध हो या शूकरवध हो या और भी किसी प्राणी का वध हो, जब दोनों ही अहिंसा को महत्त्व देते हैं तब दोनों को वध का विरोधी होना चाहिये। गोवध और शूकरवध के विरोध पर जो खास जोर दिया जाता है उसके कारण ढूँढने की अगर कोशिश की जाय तो दोनों एक दूसरे के मत का आदर करेंगे। हिन्दुस्थान कृषिप्रधान देश है। खेती की जरूरत हिन्दुओं को भी है और मुसलमानों को भी है और खेती में यहाँ गाय का जो महत्व है वह सब को मालूम है इसलिये गोवध का विरोध मुसलमानों को भी करना चाहिये।

शूकर वध देखनेका दुर्भाग्य अगर किसीको मिला हो तो वह मांसभक्षी ही क्यों न हो तो भी उसका दिल थर्रा जायगा। जिस तरह वह चीत्कार करता है-जिस तरह वह जिंदा जलाया जाता है इससे क्रूर से क्रूर आदमी की रूह काँप जाती है। परिस्थिति अनुकूल न होने से यद्यपि इस्लाम पूरी तरह से पशुवध नहीं रोक पाया फिर भी किसीभी कारण से शूकर वधका विरोध करके इस तरह की क्रूरता का विरोध तो उसने किया ही। कोई कोई मुसलमान भाई कहते हैं कि शूकर भिष्टा खाता है इसलिये उसे हराम कहा है। अगर यह बात है तो गोवध भी हराम कहलाया क्योंकि इसदेश में गाय भी भिष्टा खाती है।

पर यह सवाल हिंसा अहिंसा की दृष्टि से विचारणीय नहीं रह गया है इसके भीतर अधिकार का अहंकार घुस गया है। कसाईघर में दिन-रात सैकड़ों गायें कटती हैं वे गायें भी प्रायः हिन्दुओं के यहां से खरीदी जातीं हैं, इस पर हिन्दुओं को इतराज नहीं होता पर ईद के गोवध पर इतराज होता है। इसलिए यह प्रश्न अधिकार का प्रश्न बन जाता है।

जहां अधिकार का सवाल आया वहां मुसलमानों को अपने अधिकार की रक्षा के लिये गोवध करना जरूरी हो जाता है इसलिये गोवध रोकने का सब से अच्छा तरीका यह है कि साधारण पशुवध के कानून के अनुसार मुसलमानों को कुर्बानी करने दी जाय। हां, आम रास्ते पर या खुली जगह में पशुवध न करने का जो सरकारी कानून है वह धार्मिक भावना

से एक हिन्दू के नाते नहीं, किन्तु एक साधारण नागरिक के नाते पालन कराना चाहिये। सीधी बात यह है कि गोवध के प्रश्न पर हिन्दुओं को पूरी उपेक्षा कर देना चाहिये। गोवध रोकने के लिये शूकरवध करना निरर्थक है क्योंकि इससे गोवध बढ़ेगा और दोनों पक्षों में होनेवाला मनुष्यवध और हृदयवध और भी कई गुणा होगा।

गोवध रोकने का वास्तविक उपाय यह है कि गोपालन इस तरह किया जाय कि किसी को गाय बेंचने की ज़रूरत ही न पड़े। आज जो हजारों की संख्या में गोवध हो रहा है उसमें हिन्दुओं का हाथ कुछ कम नहीं है। तब वर्ष छः महीने में होनेवाला गोवध हिन्दू मुसलमानों के भाईचारे का वध क्यों करे ?

४-बहुदेववाद

हिन्दू बहुदेववादी हैं पर अनेकेश्वरवादी नहीं हैं। मुसलमानों के समान वे भी एकेश्वरवादी हैं और हिन्दुओं के समान मुसलमान भी बहुदेववादी हैं। हिन्दू एक ही परमात्मा मानते हैं उसके अवतार अंश विभूतियाँ दूत आदि अनेक मानते हैं इस प्रकार नाना रूपों से एक ही ईश्वर को पूजते हैं। मुसलमान एक ही खुदा के हजारों पैगम्बर मानते हैं और उनका सन्मान भी करते हैं। हजारों सेवकों भक्तों अवतारों के होने पर भी ईश्वर एक है।

फिर इस बातको लेकर हिन्दुओं में इतना मतभेद है जितना हिन्दू मुसलमानों में नहीं है। बहुत से हिन्दू ईश्वर ही नहीं मानते मुसलमान ईश्वर तो मानते हैं। अगर अनीश्वरवादी हिन्दुओं से ईश्वरवादी हिन्दू प्रेम से मिलकर रह सकते हैं उनसे सामाजिक सम्बन्ध भी रख सकते हैं जैसे जैनियों और बौद्धों से रखते हैं, तो ईश्वर को न मानने वाले हिन्दू और मुसलमान दोनों मिलकर एक क्यों नहीं हो सकते ?

५-पुनर्जन्म

हिन्दुओं का पुनर्जन्म और मुसलमानों की कयामत इसमें वास्तव में कोई फर्क नहीं है। दोनों मान्यताओं का मतलब यह है कि मरने के

बाद इस जन्म के पुण्य पाप का फल मिलेगा। अब वह फल मरने के बाद तुरन्त ही मिलना शुरू होजाय या कुछ समय बाद मिले इसमें धार्मिक दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है। क्योंकि दोनों से पाप से भय और पुण्य का आकर्षण पैदा होता है। इसलिये इस बात को लेकर भी दोनों में कोई भेदभाव नहीं है।

३ बाजा

हिन्दू पूजा में बाजा बजाते हैं पर मुसलमान भी बाजे के विरोधी नहीं हैं। ताजियों के दिनों में तो इतने बाजे बजाते हैं कि शहर भर की नीन्द हराम हो जाती है। और हिन्दू पूजा में बाजा बजाने पर भी सन्ध्या-वन्दन आदि के समय ऐसे चुप रहते हैं कि स्वास भी रोक लेते हैं। इससे इतना पता तो लगता है कि बाजे के विरोधी न हिन्दू हैं न मुसलमान, न मौन का विरोधी दोनों में से कोई है। बात सिर्फ मौके की है।

इस देशमें बाजे का इतना अधिक रिवाज है कि उसे बीमारी तक कहा जा सकता है। कभी कभी मुझे व्याख्यान देते समय इसका बड़ा कडुआ अनुभव हुआ करता है। व्याख्यान खूब जमा है श्रोता तल्लीन हैं इतने में पड़ौस के मन्दिर से घंटे की आवाज आई और ऐसी आई कि मेरी आवाज बेकाम होगई। पुजारीयों को घण्टे से कितना मजा आया सो तो मालूम नहीं पर सैकडों और कभी कभी हजारों श्रोताओं का मजा किरकिरा होगया यह तो सब ने अनुभव किया। कभी कभी सभा के पास से विवाह आदि के जुलूस ही निकलकर मजा किरकिरा कर दिया करते हैं, इससे इतना तो लगता है कि बाजों को कुछ कम करना जरूरी है पर इससे भी जरूरी यह है कि जो कुछ हो नागरिकता के आधार पर बनाये गये कानून के अनुसार हो या समझा बुझाकर हो। नागरिकता के आधार पर नियम कुछ निम्नलिखित ढंग से बनाये जासकते हैं।

क—रात के दस बजे के बाद सुबह पांच बजे तक बाजा बजाना बन्द रहे।

ख—मसजिद में जब नमाज पढ़ी जाती हो तब आसपास बाजा बजाना बन्द रहे। पर इसकी सूचना किसी झण्डे या निशान से दी जाय

और समय नियत रहे।

ग-जहाँ पचीस या पचास आदमियों से अधिक की सभा भरी हो व्याख्यान हो रहा हो तो सूचना मिलते ही वहां बाजा बजाना बन्द रहे।

घ-बाजा बजाने पर टेक्स लगाया जाय आदि। इस प्रकारके नियम बनाये जाँय पर वे नागरिक अधिकारों की समानता से रक्षा करते हों मज़-हब के घमण्ड की रक्षा न करते हों

पर जब तक वह बाजा कानून न बने तब तक गोवध के समान इस प्रश्न पर भी पूरी उपेक्षा की जाय। जिसको बजाना हो बजाये न बजाना हो न बजाये। व्याख्यान होता हो, नमाज़ पढ़ी जाती हो किसी घर में गमी हुई हो तो इस बात की सूचना बाजे बजानेवालों को कर दी उन्हें जची तो ठाक, न जची तो न सही, अधिकार के बलपर या डरा धमकाकर या मारपीट कर बाजे रुकवाने का कोई मतलब नहीं। इससे तो प्राणों के ही बाजे बज जाते हैं। पूजा और नमाज़ सब नष्ट होजाते हैं।

सच्चे धर्म की बात तो यह है कि अगर नमाज़ पढ़ी जाती हो और ठाकुरजी की सवारी गाजे बाजे के साथ निकले तो मसजिद के सामने आते ही सवारी को रुक जाना चाहिये और सब लोग शांति से इस तरह खड़े रह जाँय मानों नमाज़ में शामिल हो गये हों। नमाज़ खत्म होनेपर मुसलमान लोग सवारी को सन्मान से विदा करें। अगर सवारी नमाज़ के पहिले ही आ जाय तो सवारी को सन्मान से विदा देने पर मुसलमान लोग नमाज पढें अगर इसके लिये दस पांच मिनिट नमाज में देर हो जाय तो कोई हानि नहीं।

हिंदू और मुसलमान किसी तरह दो हो सकते हैं पर ईश्वर और खुदा तो दो नहीं हो सकते तब खुदा के लिये ईश्वर का और ईश्वर के लिये खुदा का अपमान किया जाय तो क्या खुदा या ईश्वर किसी भी तरह खुश होगा।

यह सचाई अगर ध्यान में आजाय तो नमाज और पूजा का झगड़ा ही मिट जाय।

लोग प्रतिदिन एक ही तरह से नमाज पढ़ते हैं उन्हें कभी पूजा का

भी मजा लेना चाहिये और जो सदा पूजा करते हैं उन्हें नमाज का भी मजा लेना चाहिये, खाने पीने में जब हमें नये नये स्वाद चाहिये तब क्या मन को नये नये स्वाद न चाहिये ? और उस हालत में तो ये कर्तव्य हो जाते हैं जब ये नये नये स्वाद प्रेम शान्ति और शक्ति के लिये बड़े मुफीद साबित होते हैं। पूजा नमाज प्रार्थना आदि सब का उपयोग हमारे जीवन के लिये हरतरह मुफीद है।

७ पूर्व-पश्चिम

एक भाई ने पूछा कि आप हिन्दू मुसलमानों में क्या मेल करेंगे ? एक पूर्व को देखता है और एक पश्चिम को ? मैंने कहा—मिलते समय या बातचीत करते समय ऐसा होना जरूरी है। आप जिस तरफ को मुँह किये हैं उस तरफ को अगर मैं भी करूँ तो आप मेरी पीठ देखेंगे, बात क्या करेंगे ? मैं अगर छाती से छाती लगाकर आप से मिलना चाहूँ तो जिस तरफ को आपका मुँह होगा उससे उल्टी दिशा में मेरा मुँह होगा अन्यथा मिल न सकेंगे। मिलने के लिये जब एक दूसरे से उल्टी दिशा में मुँह करना जरूरी है तब पूजा नमाज के मिलने में उल्टी दिशा बाधक क्यों बने ?

समझ में नहीं आता कि ऐसी छोटी छोटी बातें हमारे जीवन में अड़ंगा क्यों डालती हैं। और मर्म की बात समझने की कोशिश क्यों नहीं की जाती। दिशा का झगड़ा एक तो निःसार है और निःसार न भी हो तो भी बेबुनियाद है। मुसलमान नमाज के लिये मक्का की तरफ मुँह करते हैं, हिन्दुस्थान से मक्का पश्चिम में है इसलिये पश्चिम में मुँह किया जाता है, योरुप में नमाज पूर्व में मुँह करके पढ़ी जाती है—दक्षिण आफ्रिका में उत्तर तरफ और उत्तरीय देशों में दक्षिण तरफ। खुद मक्का में क़िब्ला के चारों तरफ चार इमाम नमाज पढ़ने बैठते हैं—एक का मुँह पूर्व को, एक का मुँह पश्चिम को, एक का उत्तर को और एक का दक्षिण को, दिशा की बात ही नहीं है। और हिन्दू तो जब सूर्य को नमस्कार करते हैं तभी उनका मुँह पूर्व की तरफ होता है अन्यथा जिधर मूर्ति होती है उधर

ही प्रणाम करते हैं, मूर्ति का मुँह पूर्व को हो तो पुजारी का मुँह पश्चिम को होगा जिससे मूर्ति से सामना हो सके।

साधारणतः हिन्दू देवों का स्थान सब जगह माना जाता है। ईश्वर की शक्तियाँ नाना ढंग से नाना दिशाओं में हैं इसलिये हिन्दू सब दिशाओं में प्रणाम करता है। तीर्थों के विषय में यह कहा जासकता है--

सेतुबन्ध जेरुसलम काशी मक्का या गिरनार।
सारनाथ सम्मेदशिखर में बहती तेरी धार॥
सिन्धु गिरि नगर नदी वन ग्राम।
कहूँ क्या, कहां कहां है धाम।

किब्ला के विषय में यह कहा जासकता है--

क्या मसजिद मन्दिर गिरजाघर मक्का और मदीना।
खुदा जहाँ किब्ला है वो ही खुदा भरा तिलतिल में॥

अब बतलाइये झगड़ा किधर है?

८ दाढ़ी चोटी

हिन्दू-मुसलिम दंगों को 'दाढ़ी चोटी संग्राम' कहा जाता है। जब कि दाढ़ी चोटी ये फैशन हैं इनका हिन्दू मुसलमानों से कोई ताल्लुक नहीं। सिक्ख दाढ़ी रखते हैं-हिन्दू सन्यासी दाढ़ी रखते हैं-राजस्थान के तथा अन्य प्रांतों के क्षत्रिय दाढ़ी रखते हैं और भी बहुत से हिन्दू दाढ़ी रखते हैं जब कि हजारों मुसलमान ऐसे हैं जो दाढ़ी नहीं रखते इसलिये दाढ़ी को लेकर हिन्दू मुसलमानों में कोई भेद नहीं है।

रह गई चोटी की बात, सो चोटी का भी कोई नियम नहीं है। लाखों हिन्दू चोटी नहीं रखते और बहुत से मुसलमान किसी न किसी तरह चोटी रखते हैं--वे सिरपर चोटी नहीं रखते टोपी पर चोटी रखते हैं पर रखते हैं, इसलिये चोटी से भी हिन्दू मुसलमानों में कोई भेद नहीं है।

असल बात यह है कि यह सब फैशन है। पुराने जमाने में लोग स्त्रियों सरीखे लम्बे बाल रखते थे साफ सफाई की अड़चन से लोग गर्दन तक बाल रखने लगे। बाद में किनारे किनारे बाल कटाकर बीच में बड़ा

चोटला रखने लगे जैसे दक्षिण में अभी भी रिवाज है, वह चोटला कम होते होते चार बालों की चोटी रहगई, और अन्त में चोटी भी साफ होगई। जैसे लम्बी मूछों से मक्खी सरीखी मूछें रहीं और अन्त में साफ होगई यही बात चोटी की हुई। पश्चिम में एक और फैशन था, लोग सिर तो घुटा लेते थे पर एक तरह की टोपी लगा लेते थे जिस पर बहुत सुन्दरता से सजाये हुए नकली बाल रहते थे। पुराने जमाने में इंग्लैण्ड के लार्ड ऐसी टोपियों का उपयोग करते थे इस प्रकार सिर के बालों का फैशन टोपी के बालों का फैशन बन गया और इसीलिये सिर की चोटी तुर्क स्थान में टोपी की चोटी बन गई। इसीलिये तुर्की टोपी लगानेवाले मुसलमान सिर पर चोटी न रखकर टोपीपर चोटी रखते हैं। हाँ, बहुत से हिन्दू और मुसलमान न सिर पर चोटी रखते हैं न टोपीपर चोटी रखते हैं। इस प्रकार हिन्दुत्व और मुसलमानियत, दोनों ही न चोटी से लटक रहे हैं न दाढ़ी में फँसे हैं इसलिये इस बात को लेकर झगड़ा व्यर्थ है।

९ देशभेद

कहा जाता है कि हिन्दू पहिले से यहां रहते हैं और मुसलमान अरबी हैं या पिछले हजार वर्ष में बाहर से आये हैं। इस प्रकार दोनों के पूर्वज जुदे जुदे होने से दोनोंमें स्थायी एकता नहीं हो पाती।

इसमें सन्देह नहीं कि मुट्ठी दो मुट्ठी मुसलमान बाहर से जरूर आये हैं पर आज जो हिन्दुस्थान में नव करोड़ मुसलमान हैं वे जाति से हिन्दू ही हैं यद्यपि अब एक धर्म का नाम भी हिन्दू हो गया है और सामाजिक क्षेत्र भी बट गया है इसलिये मुसलमान अपने को हिन्दू न कहें -- हिन्दी, हिन्दुस्थानी या भारतीय आदि कहें पर इसमें शक नहीं कि हिन्दुओं की जाति और मुसलमानों की जाति जुदी नहीं है। जिन हिन्दुओं ने धर्मपरिवर्तन कर लिया वे ही मुसलमान कहलाने लगे—इससे जाति या वंश-परम्परा कैसे बदल गई? आज मैं अगर मुसलमान हो जाऊँ तो कुछ रहन-सहन बदल लूँगा नाम भी बदल लूँगा पर क्या बाप भी बदल लूँगा? अपने पुरखे भी बदल लूँगा? बाप और पुरखे वे ही रहेंगे जो मुसलमान होने के पहिले थे, तब जाति जुदी कैसे हो जायगी। इसलिये राम कृष्ण

महावीर बुद्ध व्यास चन्द्रगुप्त अशोक विक्रम आदि जैसे हिन्दुओं के पुरखे हैं वैसे ही मुसलमानों के पुरखे हैं दोनों को उनका गौरव मानना चाहिये। इस प्रकार जातीय दृष्टि से हिन्दू मुसलमान बिलकुल भाई भाई हैं धर्म जुदा है तो रहने दो। बुद्ध और अशोक का धर्म तो आज के हिन्दू भी नहीं मानते फिर भी उन्हें अपना पूर्वज समझते हैं। कई दृष्टियों से हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म में जितना अन्तर है उतना हिन्दू धर्म और इसलाम में नहीं।

यों तो कोई भी धर्म बुरा नहीं है, कौन सा धर्म अच्छा और कौन सा बुरा या कम अच्छा यह तुलना करना फजूल है, अपनी अपनी योग्यता परिस्थिति और रुचि के अनुसार सभी अच्छे हैं। हिन्दू अगर मुसलमान हो गये तो इससे किसी की भी धर्महानि नहीं हुई, सत्य सब जगह था जिसको जहां से लेना था सो ले लिया इसमें किसी का क्या बिगड़ा। रुचि के अनुसार धर्मक्रिया करने से जाति या देश जुदे जुदे नहीं होजाते। इसलिये मुसलमान भी हिंदुओं के समान हिन्दू हिन्दी हिन्दुस्थानी हैं। उनका भी इस देशपर उतना ही अधिकार है जितना हिन्दू कहलानेवालों का। दोनों ही एक माता की सन्तान हैं।

रह गई उन मुसलमानों की बात जो बाहर से आये हैं। ऐसे मुसलमान बहुत थोड़े तो हैं ही, साथ ही उनमें भी शायद ही कोई ऐसा मुसलमान हो जिसका सम्बन्ध हिन्दू रक्त से न हो। सम्राट अकबर के बाद मुगल बादशाहों में भी आधे से ज्यादा हिन्दू रक्त पहुँच गया था जो पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ता ही गया।

मनुष्यने अपनी समाज-रचनासे चाहे जो कुछ व्यवस्था बनाई हो लेकिन कुदरत ने तो चलते फिरते प्राणियों को मातृवंशी ही बनाया है अर्थात् इनमें जातिभेद मादा के अनुसार बनता है नर के अनुसार नहीं। जमीन में जैसे आप गेहूँ चना आदिके भेदसे जुदी जुदी जातिके झाड़ पैदा करसकते हैं वैसे गाय भैंस या नारी में नर के भेद से जुदी जुदी तरह के प्राणी पैदा नहीं कर सकते, वहां मादा की जाति ही सन्तान की जाति होगी।

ऐसी हालत में हिन्दू माताओं से पैदा होनेवाले मुसलमान भी जाति से हिन्दू ही रहे, धर्म से भले ही वे मुसलमान कहलाते हों। इस प्रकार बाहर से आये हुए मुसलमान भी कुछ पीढ़ियों में पूरी तरह हिन्दू जाति के बन गये हैं। इसलिये यह कहना कि मुसलमान बाहर के हैं और हिंदू यहां के हैं बिलकुल गलत है। दोनों एक हैं-दोनों के पुरखे एक हैं—जाति एक है, देश एक है। इसलिये अरबी या हिन्दुस्थानी होने से हिन्दू मुस्लिम मेल को अस्वाभाविक बतलाना ठीक नहीं।

१० लिपिभेद

कहा जाता है कि हिंदुओं की लिपि देवनागरी है और मुसलमानों की फारसी, अब दोनों में मेल कैसे हो ?

यह एक नकली झगड़ा है। इसलाम का मूल अगर अरब में माना जाय तो अरबी को महत्ता मिलना चाहिये फारस तो इसलाम के लिये ऐसा ही है जैसा कि हिंदुस्थान। फारस में हिंदुस्थान की या हिंदुस्थान में फारस की लिपि को इतनी महत्ता क्यों मिलना चाहिये।

खैर, मिलने भी दो, पर न तो नागरी हिंदुओं की लिपि है न फारसी मुसलमानों की। बंगाल के हिन्दू नागरी पसंद नहीं करते, मद्रास तरफ भी हिन्दू नागरी नहीं समझते खास तौर से जिनने सीखी है उनकी बात दूसरी है, उधर पंजाब तरफ के हिंदू नागरी की अपेक्षा फारसी का उपयोग ही अच्छी तरह करते हैं और मध्यप्रांत के मुसलमान फारसी लिपि नहीं समझते। इस प्रकार भारत में अगर फारसी लिपि को स्थान मिला है तो वह प्रांत के अनुसार मिला है न कि जाति के अनुसार। इसलिये इन्हें हिंदू मुसलमानों के भेद का कारण बनाना भूल है।

अच्छी बात तो यह है कि सर्वगुणसम्पन्न कोई ऐसी लिपि हो जिसमें लिखने और पढ़ने में गड़बड़ी न हो छपाई का सुभीता हो सरल भी हो। देवनागरी में भी इस दृष्टि से बहुत सी कमी है वह दूर करके या और किसी अच्छी लिपि का निर्माण करके उसे राष्ट्र लिपि मानलेना चाहिये।

११ भाषाभेद

लिपि की अपेक्षा भाषा का सवाल और भी सरल है जबर्दस्ती उसे जटिल बनाया जाता है। लिपि तो देखने में जरा अलग मालूम होती है और उसमें सरल कठिन का भेद नहीं किया जासकता पर भाषा तो हिंदी उर्दू एक ही है। दोनों का व्याकरण एक है क्रियाएँ एक हैं अधिकांश शब्द एक हैं, कुछ दिनों से संस्कृतवालों ने संस्कृत शब्द बढ़ाने शुरु किये, अरबी फारसीवालों ने अरबी फारसी शब्द, बस एक भाषा के दो रूप होगये और इसपर हम लड़ने लगे। हम दया कहें कि मिहर, इसीपर हमारी मिहरबानी और दयालुता का दिवाला निकल गया, प्रेम और मुहब्बत में ही प्रेम और मुहब्बत न रही।

भाषा तो इसलिये है कि हम अपनी बात दूसरों को समझा सकें, बोलने की सफलता तभी है जब ज्यादा से ज्यादा आदमी हमारी बात समझें अगर हमारी भाषा इतनी कठिन है कि दूसरे उसे समझ नहीं पाते तो यह हमारे लिये शर्म और दुर्भाग्य की बात है। जब मैं दिल्ली तरफ जाता हूँ तब व्याख्यान देने में मुझे कुछ शर्म सी मालूम होने लगती है। क्योंकि मध्यप्रांत निवासी होने क कारण और जिन्दगी भर संस्कृत पढ़ाने के कारण मेरी भाषा इतनी अच्छी अर्थात् सरल नहीं है कि वहां के मुसलमान पूरी तरह समझ सकें। इसलिये मैं कोशिश करता हूँ कि मेरे बोलने में ज्यादा संस्कृत शब्द न आने पावें, इस काम में जितना सफल होता हूँ उतनी ही मुझे खुशी होती है और जितना नहीं हो पाता उतना ही अपने को अभागी और नालायक समझता हूँ। मुझे यह समझमें नहीं आता कि लोग इस बात मे क्या बहादुरी समझते हैं कि हमारी भाषा कम से कम आदमी समझें। ऐसा है तो पागल की तरह चिल्लाइये कोई न समझेगा, फिर समझते रहिये कि आप बड़े पण्डित हैं।

हरएक बोलनेवाले को यह समझना चहिये कि बोलने का मजा ज्यादा से ज्यादा आदमियों को समझाने में है। पागल की तरह बेसमझी की बातें बकने नें नहीं।

हाँ, सुननेवालों को भी इतना खयाल चाहिये कि हो सकता है कि बोलनेवाला सरल से सरल बोलने की कोशिश कर रहा हो पर जिन शब्दों को वह सरल समझ रहा हो वे अपने लिये कठिन हों उसका भाषा-ज्ञान ऐसा इकतरफा हो कि वह ठीक तरह से हिंदुस्थानी या सरल भाषा न बोल पाता हो तो उसकी इस बेवशी पर हमें दया करना चाहिये। बिना समझे घमण्डी या ऐसा ही कुछ न समझना चाहिये।

और बातों में लड़ाई हो तो समझ में आती है पर भाषा में लड़ाई हो तो कैसे समझें ? भाषा से ही तो हम समझ सकते हैं। इसलिये चाहे लड़ना हो चाहे मिलना हो पर भाषा तो ऐसी ही बोलना पड़ेगी जिससे हम एक दूसरे की गाली या तारीफ समझ सकें।

१२ धार्मिक उदारता

हिंदूधर्म और इस्लाम दोनों ही उदार हैं और इस विषयमें साधारण हिन्दू समाज और मुसलमान समाज भी उदार है। पर मुश्किल यह है कि एक दूसरे को समझने की कोशिश नहीं करते। हिन्दूधर्म में तो साफ कहा है—

'यद्यद्विभूतिमत्सत्वम् मत्तेजोंशसम्भवम्'

जितनी विभूतियाँ हैं वे सब ईश्वर के अंश से पैदा हुई हैं। इसलिये हिन्दू दृष्टि में तो किसी भी धर्म के देव हों हिन्दू से वन्दनीय हैं। साधारण हिन्दू का व्यवहार भी ऐसा होता है। उस व्यवहार में विवेकरूपी प्राण फूँकने की जरूरत अवश्य है पर उसमें उदारता अवश्य है। इस्लाम के अनुसार तो हर कौम और हर मुल्क में खुदा ने पैगम्बर भेजे हैं और उनका मानना हरएक मुसलमान का फर्ज है इसलिये साधारणतः मुसलमान किसी धर्म के महात्माओं का खण्डन नहीं करते, ऐसे मुसलमान कवियों की संख्या कम नहीं है जिनने श्रीकृष्ण आदि की स्तुति में पद्य भरे हैं। दुर्गा और भैरव तक के गीत गाने में मुसलमान कवि किसी से पीछे नहीं हैं पर दुख इस बात का है कि बहुत कम हिन्दुओं को इस बात का पता है। जरूरत है एक दूसरे के समझने की।

१३ नारी अपहरण

बहुत से लोगों की शिकायत है कि मुसलमान लोग हिन्दू नारियों का अपहरण करते हैं। अपहरण से यहाँ फुसलाना आदि भी समझ लिया जाता है। पर इस विषयमें हिन्दू मुसलमानों में उन्नीस बीस का ही अंतर है। ऊँची श्रेणी के मुसलमान और ऊँची श्रेणी के हिन्दू दोनों ही नारी-अपहरण नहीं करते। बाकी हिन्दू और मुसलमानों में अपहरण होता है। जिन लोगों में तलाक का रिवाज है और आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है उन लोगों में इस तरह अपहरण होते हैं। हां, यह बात अवश्य है कि मुसलमान लोग मुसलमान और हिंदू कहीं से भी अपहरण करते हैं जबकि हिंदू हिंदुओं में से ही खासकर अपनी जाति में से ही अपहरण करते हैं। इसका कारण हिन्दुओं का जातीय संकोच है, अपहरण-वृत्ति का अभाव नहीं। इसका इलाज मुसलमानों को कोसना नहीं है किंतु अपनी क्षुद्र जातीयता का त्याग करना है।

हिन्दुओं में बहुत-सी जातियां ऐसी हैं जिनमें विधवाओं को दूसरा विवाह करने की मनाई है—ऐसी विधवाएं जब ब्रम्हचर्य से नहीं रह पातीं तब वे भ्रष्ट हो जाती हैं उस समय प्रायः हिंदू जातियों में उसे स्थान नहीं मिलता तब वे राजी खुशी से मुसलमान होना पसन्द कर लेती हैं। हिन्दू लोग अगर क्षुद्र जातीयता का त्याग कर दें और विधवा-विवाह का विरोध दूर कर दें तो नारी अपहरण की घटनाएं न हो सकें।

फिर भी अगर कभी ऐसी घटना हुई हो जहां किसी नारी के साथ अत्याचार हुआ हो तो वहां सामान्य नारी रक्षण की दृष्टि से प्रयत्न करना चाहिये। नारी अपहरण का दोष किसी जाति के मत्थे न मढ़ना चाहिये। साधारणतः यही कहना चाहिये कि उस गुंडे ने या उन गुंडोंने ऐसा काम किया है।

जब तक हिन्दू मुसलमानों के दिल साफ नहीं हैं तभी तक यह झगड़ा है और बात बात में एक दूसरे पर शंका होने लगती है। इसका फल यह होता है कि जब अत्याचार गौण और जातीय द्वेष मुख्य बन जाता है तब ऐसे लोग भी साथ देने लगते हैं जो अत्याचार से घृणा करते

हैं किन्तु जातीय अपमान सहन नहीं कर सकते। इससे समस्या और उलझ जाती है। इसलिये ऐसी घटनाओं को जातीय रंग में न रँगना चाहिये। सार बात यह है कि जब दोनों के मन का मल धुल जायगा और हिन्दू लोग अपनी जातयि संकुचितता और पुनर्विवाह-विरोध दूर कर देंगे तो नारी-अपहरण की समस्या बिलकुल हल हो जायगी। एक दूसरे के साथ घृणा प्रगट करने से वह समस्या हल नहीं होसकती।

१४ छूत अछूत

मुसलमानों की यह शिकायत है कि हिन्दू उन्हें अछूत समझते है? इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दुओं में छूत-अछूत की बीमारी है पर इसका उपयोग वे मुसलमानों के साथ कुछ विशेष रूप में करते हैं यह बात नहीं है। हिन्दू भंगी चमार बसोर महार आदि हिन्दुओं को जितना अछूत समझते हैं उतना मुसलमानों को नहीं। बल्कि मुसलमानों को अछूत समझते ही नहीं। हां, उनके साथ नहीं खाते पीते, सो तो वे एकधर्म एक वर्ण के लोगों के साथ भी नहीं खाते पीते। इस विषय में मुसलमानों के साथ खास घृणा नहीं की जाती। हिन्दुओं की दृष्टि में तो हिन्दुओं की हजारों जातियों के समान मुसलमान भी एक जाति है।

छूत अछूत के प्रश्न में हिन्दू मुसलमानों को मिलाने की इतनी ज़रूरत नहीं है जितनी हिन्दू हिन्दू को मिलाने की। इस बात को लेकर हिन्दू मुसलिम द्वेष के लिये कोई स्थान नहीं है।

इस प्रकार और भी बहुत सी छोटी छोटी बातें मिलेंगीं पर ऐसी सैकड़ों बातें तो एक मां बाप से पैदा हुए दो भाइयों में भी पाई जातीं हैं पर इससे क्या वे भाई भाई नहीं रहते? हिन्दू मुसलमान भी इसी तरह भाई भाई हैं।

नासमझी से या स्वार्थी लोगों के बहकाने से एक दूसरे पर अविश्वास पैदा हो रहा है और दोनों ऐसा समझ रहे हैं मानों एक दूसरे को खाजायंगे। इसी झूठे भय से कभी कभी एक दूसरे का सिर फोड़ देते हैं। पर क्या हजार पांचसौ हिंदुओं के मरने से या हजार पांचसौ मुसलमानों के

मरने से हिन्दू या मुसलमान नष्ट होजाँयगे ?

सन् १९१८ में इन्फ्लुएंजामें एक करोड़से भी अधिक आदमी मर गये थे फिर भी जब बाद में मर्दुमशुमारी हुई तो पहिले से साठ लाख आदमी ज्यादा थे। उस इन्फ्लुएन्जा से ज्यादा तो हम एक दूसरे को नहीं मार सकते फिर कैसे एक दूसरे को नष्ट कर देंगे।

हिन्दू सोचें कि हम मुसलमानों को मार भगायेंगे तो यह असम्भव है। जिस दिन मुट्ठी भर मुसलमान हिन्दुस्थानमें आये उस दिन हिंदू स्वतंत्र शासक होकर भी नहीं भगा सके या नष्टकर सके, अब आज खुद गुलाम होकर नव करोड़ मुसलमानों को क्या भगायेंगे ? यदि मुसलमान सोचें कि हम हिन्दुओं को नेस्तनाबूद कर देंगे तो जिन दिनों उनके हाथ में हिन्दुस्थान की बादशाहत थी उन दिनों वे हिन्दुओं को नेस्तनाबूद न कर सके तो आज खुद गुलाम होकर वे क्या हिन्दुओं को नेस्तनाबूद करेंगे।

दोनों में से एक भी किसी दूसरे को नेस्तनाबूद नहीं कर सकता, हाँ, दोनों लड़कर आदमियत को नेस्तनाबूद कर सकते हैं शैतान बनकर इस गुलजार चमन को दोजख बना सकते हैं।

१'१ पाकिस्तान

कुछ लोग हिन्दू मुसलमानोंके झगड़ोंको निपटानेके लिये पाकिस्तानकी योजना सामने लाते हैं। अगर पाकिस्तान से भलाई होती हो तो किसी को भी उसके बनाने में इतराज नहीं है। पर हिन्दू मुसलमान इस तरह देश भर में फैले हुए हैं कि उनकी बस्ती अलग अलग करना असंभव है। पाकिस्तान में भी हिन्दुओं को रहना होगा और हिन्दुस्तान में भी मुसलमानों को। दोनों के स्वार्थ जैसे आज एक हैं वैसे कल भी एक रहेंगे। पर शायद उसदिन हिंदू समझेंगे कि अब हम स्वतंत्र हैं मुसलमान समझेंगे कि हम स्वतंत्र हैं जब कि वास्तवमें दोनोंके दोनों गुलाम और कमजोर रहेंगे। कदाचित् घमण्ड में आकर अल्पमत कौम को दबाना चाहें तो दूसरी जगहके लोग उसका बदला लेंगे इस प्रकार वैर वैर को बढ़ाता जायगा न पाकिस्तानवाले खुशहाल होंगे न हिन्दुस्थानवाले। अपने पाप से फूट से अन्याय से गुलाम रहेंगे बर्बाद होंगे।

अन्तमें वहां भी मिलकर दोनोंको एक बनना होगा इसके सिवाय कोई रास्ता नहीं है तो उसके लिये अभी और यहीं प्रयत्न क्यों न किया जाय। एक ही नस्लके और एक ही देश के रहनेवाले भाई सदा के लिये बिछुड़कर वैर मोल क्यों लें ?

पाकिस्तान पर जितना भी विचार किया जाये वह विलकुल बेबुनियाद मालूम होता है। पहिले तो उसका नाम ही गलत है। पंजाब बंगाल आदि में ऐसा क्या पाकपन है जिससे वह पाकिस्तान कहा जाय। इसलाम तो दूसरे मजहबों और उनके पैगम्बरोंको भी खुदा का मजहब और पैगम्बर मानता है इसलिये दूसरी जगहें भी पाकिस्तान कहलाईं। फिर भी अगर इसलाम के साथ खास पक्षपात करना हो तो मक्का मदीना को पाकिस्तान कह सकते हैं। पर इसलाम के इतने लम्बे इतिहास में मक्का मदीना अरब, किसी को पाकिस्तान नहीं कहा गया तब पंजाब को पाकिस्तान कहना तो मक्का मदीने की बेइज्जती कहलाई।

इस देश का नाम हिन्द, सिन्धु नदी के कारण पड़ा है, फारस आदि पश्चिम के लोगों ने सिन्ध का उच्चारण हिन्द किया धीरे धीरे सारे मुल्क को हिन्द कहने लगे। अब यह ताज्जुब की बात है कि उसी सिन्ध नदी को हिन्द से अलग करने की बात कही जाती है।

पाकिस्तान से मुसलमानों का कितना नुकसान है इसका एक नमूना यह भी है कि मुसलमानों के खास खास तीर्थस्थान, और चमकते हुए शहर सब पाकिस्तान के बाहर रह जायँगे। दिल्ली आगरा लखनऊ अजमेर आदि सभी पाकिस्तान के बाहर होंगे। यह क्या मुसलमानों के लिये शोभा की बात होगी ?

पाकिस्तान से इसलाम के प्रचार में बाधा होगी। अभी तक यह कहा जाता है कि मजहब व्यक्तिगत चीज है जिसको जो मजहब पसन्द है वह ग्रहण करले, और जिसको इसलाम का प्रचार करना हो करे, पर पाकिस्तान बनने पर लोग इस बुनियाद पर इसलाम के प्रचार का विरोध करेंगे कि इसलाम के प्रचार से देश के टुकड़े होते हैं वह सिर्फ व्यक्तिगत बात नहीं रहती इसलिये इसलाम का प्रचार गैरकानूनी घोषित होना चाहिये

जिससे देश की एकता बनी रहे।

पाकिस्तान के विरोध में इतनी ही दलीलें नहीं हैं किन्तु सब से बड़ी बात तो यह है कि प्रजातंत्र के आधार पर पाकिस्तान बन नहीं सकता या वह इतना कमजोर बनेगा कि अपने दमपर खड़ा नहीं हो सकता। जिस पंजाब को पाकिस्तान बनाया जारहा है उसके तीस जिलोंमें से तेरह जिले ऐसे हैं जहां मुसलमानों की अपेक्षा दूसरों की संख्या ही अधिक है। देखिये निम्नलिखित जिलोंमें मुसलमानों की संख्या फी सदी कितनी है। हिसार २८, रोहतक १७, गुड़गांव ३२, करनाल ३०, अम्बाला ३१, शिमला १६ कांगड़ा ५, होशियार पुर ३३, जालन्धर ४४, लुधियाना ३५, फीरोजपुर ४५, अमृतसर ४७ गुरुदास पुर ५०।

जब पाकिस्तान बनेगा तब इन जिलों के लोग पाकिस्तानमें शामिल न होंगे। तब पंजाब एक बहुत ही छोटा सा राष्ट्र रहजायेगा। जो आर्थिक दृष्टिसे अपने पैरों पर न खड़ा रह सकेगा। खनिज पदार्थों की कमीसे तो वह और भी लगँड़ा होगा।

जो हाल पंजाबका है उससे बुरा हाल बंगालके पाकिस्तानका होगा। बंगाल के २८ जिलोंमेंसे १४ जिलोंमें ही मुसलमानोंको संख्या अधिक है। बाकी निम्नलिखित चौदह जिलोंमें उनकी संख्या अधिक नहीं है। बंगालके इन जिलोंमें मुसलमानोंकी संख्या फी सदी निम्नलिखित है।

वर्द्वान १६, वीरभूम २७, बांकुरा ५, मिदनापुर ७, हुगली १७, हबड़ा २१, हब्ड़ा शहर २१, चौबीस परगना ३५, कलकत्ता २६, कलकत्ता उपनगर १६, खुलना ४६, जलपाई गुड़ी २४, दार्जिलिंग २, दीनाजपुर ५०।

इन चौदह जिलों के निकलजाने से खास कर कलकत्ता और हबड़ा निकल जाने से बंगाल के पाकिस्तानकी क्या शोभा और शक्ति रहेगी? आधे प्रान्त का क्या राष्ट्र बनेगा? और पंजाब से तो उसका सम्बन्ध जुड़ना असम्भव सा होगा। दोनों में हजार मील से भी ऊपर का अंतर रहेगा। उसके बीचमें युक्तप्रान्त और विहार तो पूरा का पूरा रहेगा साथ ही बंगाल के और पंजाबके हिन्दू जिले भी रहेंगे। इसप्रकार पाकिस्तान धार्मिक सामा-

जिक राजनैतिक किसीभी दृष्टिसे मुसलमानों के फायदे की चीज़ नहीं है बल्कि हिंदुओं की अपेक्षा मुसलमानों का नुकसान अधिक है। यों सारे राष्ट्र का नुकसान है। इससे अगर कोई फायदा उठायगा तो कोई साम्राज्य-वादी गोरा राष्ट्र उठायगा।

पाकिस्तान से हिंदू और मुसलमान किसीकी समस्या हल नहीं होसकती यह बात नोआखाली के नरककांड, कलकत्ता और बिहार के हत्याकांड से साबित होचुकी है। इसलिये पाकिस्तान के हिमायतियों को यह आवाज उठाना पड़रही है कि आबादी का परिवर्तन किया जाय अर्थात् करोड़ों मुसलमान हिंदू प्रान्तों को छोड़कर मुसलिम प्रान्तोंमें चले जायँ और करोड़ों हिन्दू, मुसलिम प्रान्तों को छोड़कर हिन्दू प्रान्तों में चले जायँ। आबादी परिवर्तन की बात कहने केलिये गाल बजाना सरल है पर आबादी परिवर्तन की बात कितनी कठिन है इस बारेमें निम्नलिखित बातों पर विचार करना चाहिये।

१–अपनी पुस्तैनी जायदाद छोड़कर एक अपरिचित स्थानमें जाना पड़ेगा, एक घर से दूसरा घर बदलने में बड़ी कठिनाई होती है सैकड़ों चीजें बर्बाद होती हैं, फिर जब करोड़ों आदमियों को अपना घर द्वार और पुस्तैनी जायदाद छोड़कर सैकड़ों मील दूर जाना पड़ेगा उस समय उनकी कितनी दुर्दशा और बर्बादी होगी इसकी कल्पना से रूह कांपती है।

२–करोड़ों मुसलमान पाकिस्तानके किसी प्रान्तकी भाषा नहीं समझते, वहां जाकर रहना कितना तकलीफदेह होगा!

३–हर मुसलमान पीढ़ियों से जहां रहता आया है वहीं का खान पान उसे मुफीद होता है दूसरी जगह में उसे खानपान की तकलीफ होगी। मद्रास का मुसलमान जिसे भात और इमली खाने की आदत है पंजाब में मुश्किल से गुजर कर पायगा।

४–जमा जमाया व्यापार रोजगार छोड़कर अपरिचित स्थान में नये सिरे से रोजगार ढूंढना और जमाना कितना कठिन और तकलीफ-देह है।

५–दिल्ली आगरा अजमेर लखनऊ आदि खासखास मुसलिम तीर्थ-स्थान ऐसी जगह पड़ जायँगे जिनके चारों तरफ मुसलमानों की वस्ती न होगी।

६–निजाम, भोपाल के नवाब, टोंक पालनपुर आदि मुसलिम रियासतों के शासकों को अपनी रियासतें छोड़ना पड़ेंगी।

७–आज मुसलमान लोग जहां चाहे हिन्दुओं को मुसलमान बनालेते हैं पर उस समय हिन्दुस्तान में कोई मुसलमान न होगा जो हिन्दुओं को मुसलमान बनाले। अगर बदकिस्मती से कोई बन भी गया तो उसे तुरन्त पाकिस्तान में भागना पड़ेगा।

८–धर्मपरिवर्तन से राष्ट्र बदलता है और आबादी बदलने की भी नौबत आती है इसलिये धर्मपरिवर्तन कानूनन बन्द होजायगा।

ये सब परेशानियां सिर्फ इसीलिये होगीं कि हिन्दू मुसलमान सदियों से चले आये हुए भाईचारे को भुलादेना चाहते हैं। यह तो एक तरह से आदमियत का दिवाला निकाल देना है। अपने अपने मजहब को लजाना है। हिन्दू अगर सच्चे हिन्दू बनना चाहें मुसलमान अगर सच्चे मुसलमान बनना चाहें, और दोनों ही अगर आदमियों में अपनी गिनती कराना चाहें तो पाकिस्तान तथा आबादी बदलने की बात जबान पर भी न लाना चाहिये।

१६–उपाय

आफ्रिका में हिन्दू मुसलमान दोनों समान रूप से बेइज्जत किये जाते हैं, विदेशों में दोनों का एक सरीखा अपमान होता है, इस देश में भी दोनों के आर्थिक स्वार्थ एक सरीखे हैं, पूँजीवाद और सामन्तवाद के नीचे दोनों ही एक सरीखे कुचले जाते हैं, बंगाल के अकाल में दोनों लाखों की संख्या में भूख से मरते हैं इस प्रकार दोनों के एक सरीखे सुख-दुःख होनेपर भी इनका आपस में लड़ना इनकी हैवानियत की निशानी है। यह लड़ाई और आपस में अविश्वास विदेशियों की शैतानियत और इनकी हैवानियत का परिणाम है।

विदेशी सरकार ने इन दोनों को लड़ाने के लिये जो सब से बढ़िया राजनैतिक चाल खेली वह थी पृथक निर्वाचन की। धारासभा आदि दोनों के जातिवार प्रतिनिधि ही नहीं बनाये किन्तु दोनों का चुनाव भी अलग अलग करादिया। मुसलमान मेम्बर को मुसलमान ही चुनें और गैरमुसलमान को गैरमुसलमान ही। फल यह हुआ कि राजनैतिक क्षेत्र में मुसलमानों को गैरमुसलमानों से और गैरमुसलमानों को मुसलमानों से कोई मतलब न रहा। इससे सब की भलाई चाहनेवाले लोगों की अपेक्षा वे लोग जल्दी आगे आये, जो थे तो स्वार्थी, पर अपने स्वार्थ के लिये मजहब के या किसी मजहबी कौम के गीत गाने में नहीं चूकते थे। अब धारासभाओं में मुसलमानों के दुश्मन हिन्दू भी पहुँच सकते थे और हिन्दुओं के दुश्मन मुसलमान भी पहुँच सकते थे, और पहुँचे भी। उनने अपनी नेतागिरी बनाये रखने के लिये और खुदगर्जी छिपाये रखने के लिये मजहब या मजहबी कौम के गीत गाये। इस प्रकार धीरे धीरे यह विष बढ़ता गया। अब आज यह दशा है कि भाई भाई एक दूसरे का गला काटरहे हैं लड़रहे हैं अविश्वास कर रहे हैं और अपनी रक्षा के लिये गोरे विदेशियोंका मुँह ताकरहे हैं। उन विदेशियोंका, जिनने दोनोंको उल्लू बनाकर अपना काम निकालना दोनों को गुलाम रखना अपना मकसद बनारक्खा है। इन की चालको अगर हम बेकार करना चाहें और अपनी गिनती आदमियों में कराना चाहें तो सब से पहिला हमारा काम यह होना चाहिये कि हम धारासभा तथा सरकारी नौकरियों में ऐसे ही आदमी भेजें जिन्हें दोनोंही मिल कर चुने। हिन्दू या मुसलमान कितने जायें इनकी संख्या भले ही जनसंख्या के अनुसार निश्चित होजाये किन्तु कोई भी हिन्दू तब तक न चुनाजाय जब तक एक निश्चित परिमाणमें उसे मुसलमानों के भी वोट न मिलें इसी प्रकार कोई भी मुसलमान तब तक न चुना जाय जब तक एक निश्चित परिमाण में उसे हिन्दुओं के वोट न मिलें। ऐसी हालत में सरकारी क्षेत्र में ऐसेही आदमी पहुंचेंगे जो हिन्दू मुसलमान दोनों को प्यारे हों दोनों के साथ जो निःपक्षता से व्यवहार कर सकें।

इस प्रकार चुनावकी संख्या चाहे हिन्दुओंकी अल्प रहे चाहे मुसलमानोंकी

किसी के भी साथ अन्याय न होसकेगा। और दोनों को लड़ाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाले शैतान सफल न होसकेंगे। देश में अमन चैन होगा मुहब्बत बढ़ेगी।

आखिर एक न एक दिन दोनों को मिलकर रहना पड़ेगा तब दोनों की भलाई इसीमें है कि दोनों इस ढंग से चुनाव करें जिससे दोनों में विश्वास बढ़े प्रेम बढ़े। न बहुतसंख्या वाले अल्पसंख्यावालों को दबायें न अल्पसंख्यावाले बहुतसंख्यावालों के रास्ते में रोड़े अटकायें। दोनों मिल जुलकर तरक्की करें। इसका सब से बढ़िया उपाय यह है कि चुनाव ऊपर लिखे ढंगसे किया जाय।

उपसंहार

अन्त में हिन्दू और मुसलमान दोनों से मेरी प्रार्थना है कि वे अब अलग अलग होने की कोशिश न करें। एक दूसरे के उत्सवों में, त्यौहारों में, धर्मक्रियाओं में सिलने की कोशिश करें। दोनों मिलकर मंदिरों का दोनों मिलकर मस्जिदों का उपयोग करें, अपने को एक ही नस्ल का समझें। अन्त में दोनों मिलकर इस तरह एक हो जाँय कि बड़ा से बड़ा शैतान भी दोनों को न लड़ा सके।

कोई भी मजहब हो वह दुनिया की भलाई केलिये होता है। हिन्दू या मुसलमान बनने से अगर आपकी भलाई नहीं होती, अमन चैन नहीं होता, आदमियत की राह में बढ़नेमें-सुधार में-अगर अड़ंगा लगता है तब कहना चाहिये कि हिन्दुत्व मर चुका, मुसलमानियत मर चुकी, इसलिये छोड़िये इन दोनों का पिंड। आदमियत का सचाई का मजहब सीखिये!

यह बड़ीसे बड़ी शैतानियत है कि आदमी अपनी होने से हर बात को अच्छी समझे, पराई होने से हर बात को बुरी समझे। जरूरत इस बात की है मुसलमान अपनी बुराई को दूर कर हिन्दुओं से कुछ सीखें और हिन्दू अपनी बुराइयाँ दूर कर मुसलमानों से कुछ सीखें। अपनी अपनी बुराइयाँ छोड़कर और एक दूसरे की भलाइयाँ सीखकर सच्चे आदमी बनने में ही सब की भलाई है।

हिन्दूमुस्लिममेल हुए बिना कोई भी चैन से नहीं रह सकता इसलिये वह कभी न कभी होकर ही रहेगा। पर हम जितनी देर लगायेंगे उतने दिनों तक दोजखके दुःख भोगते रहेंगे, इसलिये जल्दीसे जल्दी हमें मेलकी कोशिश करना चाहिये और मेल करने का एक भी मौका न छोड़ना चाहिये।

सत्यसमाज

१—धार्मिक और सामाजिक दृष्टि से हिन्दू मुसलिममेल का ही नहीं किन्तु हिन्दू मुसलिम ईसाई जैन बौद्ध पारसी आदि सभी धर्मों के मेल का जीता जागता रूप सत्यसमाज है। सत्यसमाज के धर्मालय में रामकृष्ण महावीर बुद्ध ईसा मुहम्मद कार्लमार्क्स आदि महात्माओं के स्मारक (मूर्ति चित्र आदि) रहते हैं, सत्यसमाज की प्रार्थनाओं में ईश्वर अल्लाह खुदा गाड जिन बुद्ध आदिके तथा काशी सम्मेदशिखर सारनाथ गया जेरुसलम मक्का मदीना आदि के और मन्दिर मसजिद गिरजाघर आदि के नाम आते हैं। सब से बड़ा शास्त्र विवेक मानने पर भी सर्वधर्मसमभाव की दृष्टि से वेद कुरान पिटक सूत्र बाइबिल आवस्ता केपिटल आदिके नाम भी लिये जाते हैं।

२—खानपान विवाह आदि में ऊंचनीच गोरा काला आदि किसी तरह का जातिभेद नहीं माना जाता। सत्यसमाजी बनने पर सामाजिक दृष्टि से उसकी जाति सिर्फ मनुष्य रहजाती है।

३—सत्यसमाज में नर और नारी का दर्जा समान माना जाता है। नारीत्व के कारण किसी के धार्मिक सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक अधिकार छीने नहीं जाते।

४—सत्यसमाज हर कुरूढ़ि का विरोधी है। पुराने की अपेक्षा नये को अधिक महत्व दिया जाता है और सब से अधिक महत्व उसको दिया जाता है जिससे दुनिया की भलाई हो।

५—एक जाति राष्ट्र या मजहब दूसरी जाति राष्ट्र या मजहब पर राज्य करे, इस बात का सत्यसमाज सख्त विरोधी है। वह जनता पर उन्हीं का राज्य चाहता है जिन्हें जनता ने अपनी इच्छा से नियत किया हो और जिन्हें जनता निकाल सकती हो।

६—सत्यसमाज पूँजीवाद का विरोध करता है। धनका पूँजीवाद या अयोग्य बटवारा ही नहीं, किन्तु नाम यश प्रतिष्ठा अधिकार आदि का पूँजीवाद या अयोग्य बटवारा भी वह पसन्द नहीं करता है। सबके उचित विभाग का सन्देश देता है।

७—सत्यसमाज हर तरह के अन्धविश्वासों का विरोधी है। वह ज्ञान के क्षेत्र में विज्ञान के साथ कन्धा मिलाकर चलना चाहता है। अन्धविश्वासों की पोल खोलना भी उसके कार्यक्रम में शामिल है।

८–सत्यसमाज सारे संसार का एक राष्ट्र, सब मनुष्यों की एक भाषा लिपि जाति बनाना चाहता है।

९–सत्यसमाज भविष्य में आनेवाले उस नये संसार में विश्वास करता है–जिसमें साम्राज्यवाद, पूँजीवाद, पशुबल की महत्ता, धर्म आदि के झगड़े न होंगे; मनुष्यमात्र में कौटुम्बिकता होगी, नरनारी का अधिकार और सन्मान समान होगा, विज्ञान और धर्म परस्पर पूरक होंगे सदाचार और ईमानदारी लोगों का स्वभाव होगा, सरकार विनीत और सेवक होगी, सब मनुष्य सम्पन्न होंगे। सत्यसमाज मरने के बाद मिलने वाले स्वर्ग की चिन्ता नहीं करता वह इसी दुनिया को स्वर्ग बनाना चाहता है।

१०–आओ! जाति सम्प्रदाय के बन्धन तोड़कर या उनसे नाममात्र का सम्बन्ध रखकर सत्यसमाज में आओ! अकेले अकेले लाखों हैं पर कुछ नहीं कर सकते पर अगर सब संगठित होजायँ तो इस दुनिया को सचमुच नई दुनिया बना सकते हैं। आओ! इस दुनिया के नरक को स्वर्ग बनाने के लिये संगठित होकर काम करें।

सत्याश्रम वर्धा
ता. २–४–४७

—सत्यभक्त

सब से प्यार

भाई! कर ले सब से प्यार।

हिंदू मुसलमान ईसाई। जैनी बौद्ध पारसी भाई।
भाई भाई करो भलाई सुधरे यह संसार। भाई. ॥

गीता देखो कुरान देखो। पिटक सूत्र सब पुरान देखो।
वेद बाइबिल महान देखो। सब में प्रेम-प्रचार ॥ भाई. ॥

राम भजो रहमान भजो सब। गॉड भजो भगवान भजो सब।
नाम-भेद का ध्यान तजो सब। सब हैं एकाधार ॥ भाई. ॥

मंदिर मसजिद गिरजा जाओ। जैरुसलम मक्का फिर आओ।
काशी गया प्रयाग नहाओ। सभी उसी के द्वार ॥ भाई ॥

रंग राष्ट्र का भेद भुलाओ। जाति पाँति का फन्द छुड़ाओ।
मानव एक कुटुम्ब बनाओ। सब हैं एकाकार ॥ भाई. ॥

प्रेम शील से नाता जोड़ो, चोरी झूठ सताना छोड़ो।
खुदगर्जी से नाता तोड़ो। सब धर्मों का सार ॥ भाई. ॥